लय और भाव :-

संगीत के क्षेत्र में लय और भाव का ~~विशेष आवश्यक~~ विशेष महत्व माना गया है संगीत में भाव का होना आवश्यक है राग और भाव की दृष्टि से विद्वानों ने इनके प्रकार बताये हैं जो इस प्रकार है —

(1) भक्ति
(2) शृंगार
(3) वीर
(4) विभत्स
(5) भयानक
(6) रौद्र
(7) शांत
(8) अद्भुत ।

लय तथा ताल की गति संगीत के द्वारा भावों की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने गये हैं।

नाट्यशास्त्र में लय के महत्व एवं प्रभाव को दर्शाते हुए कहा गया है कि दुःखी एवं शांत-चीत ~~[illegible]~~ की स्थितियों में ~~[illegible]~~ मनुष्य की मनोदशा स्थिर रहती है और उग्र एवं आवेग के समय मनुष्य की नाड़ी तेज हो जाती है। ऐसे गीत जिनका

आवश्यकतानुसार विलंबित एवं मध्यलय
का ताल लाना चाहिए। इसलिए
हम देखते हैं कि भातखंडे जी द्वारा
रचित पुस्तक "क्रमिक पुस्तक मालिका" में
मालिका में रचे ही बंदिश कुछ
मध्यलय में और कुछ द्रुत लय में
बनाए जाते हैं। संगीत में अगर
लय न हो और साथ भावों
उस संगीत से भावों की उत्पत्ति न हो
तो वो संगीत संगीत नहीं होता है।
संगीत में लय का अनिवार्य
महत्व है वरना संगीत निरस लगेगा।

इसप्रकार संगीत में
लय और भाव का होना आवश्यक है।